लोग पाप क्यों करते हैं?

लेखक: जयसिंह

jagpura@yahoo.com

"पाप" एक ऐसा शब्द है, जो मानव जीवन की नैतिक, आध्यात्मिक और दार्शनिक गहराइयों को उद्घाटित करता है। यह प्रश्न कि लोग पाप क्यों करते हैं, न केवल व्यक्तिगत चेतना के परिप्रेक्ष्य में विचारणीय है, अपितु सामाजिक संरचनाओं, धार्मिक विश्वासों, मनोवैज्ञानिक प्रेरणाओं, परिस्थितिजन्य दबावों और सांस्कृतिक प्रभावों के सूक्ष्म संनाद से भी संनादित होता है। मेरे लिए यह प्रश्न व्यक्तिगत अनुभवों के साथ गहनता से संनादित है। बचपन में जगपुरा में जैन संतों के प्रवचनों ने मुझे अहिंसा, संयम और आत्म-शुद्धि के माध्यम से पाप के मूल कारणों की खोज करने की प्रेरणा दी। साथ ही, दक्षिण-पूर्व एशिया और प्रशांत क्षेत्र के देशों - फिलीपींस, मलेशिया, थाईलैंड, इंडोनेशिया, हांगकांग, तिमोर, फीजी, वियतनाम, कंबोडिया और लाओस - की यात्राओं से प्राप्त दार्शनिक अंतर्दृष्टि ने मेरे चिंतन को और समृद्ध किया। इस लेख में हम पाप के कारणों का दार्शनिक विश्लेषण करेंगे.

पाप का स्वरूप: स्वतंत्रता और उसका संनादित द्वंद्व

दार्शनिक दृष्टिकोण से, पाप मानव की स्वतंत्र इच्छा का परिणाम है। यूनानी दार्शनिक प्लेटो ने आत्मा को तर्क (Reason), भावना (Spirit) और इच्छा (Appetite) के त्रिविध रूप में विभाजित किया और प्रतिपादित किया कि जब ये संतुलन से विचलित होते हैं, तो मनुष्य अनैतिकता के मार्ग पर अग्रसर होता है। आधुनिक अस्तित्ववादी दार्शनिक ज्यां-पॉल सार्त्र ने इस विचार को और गहराई दी: "मानव स्वतंत्रता के लिए अभिशप्त है।" यह स्वतंत्रता उसे नैतिक और अनैतिक के बीच चयन की शक्ति प्रदान करती है, किंतु इसी स्वतंत्रता में पाप का बीज निहित है।

क्या स्वतंत्रता ही पाप का एकमात्र स्रोत है? क्या यह मानव स्वभाव का अपरिहार्य दोष है, अथवा इसके पीछे गहन मनोवैज्ञानिक, सामाजिक और आध्यात्मिक संनाद कार्य करते हैं? मेरी थाईलैंड और लाओस की यात्राओं में बौद्ध भिक्षुओं ने मुझे यह दृष्टि दी कि पाप अज्ञानता और अनियंत्रित इच्छाओं का परिणाम है। कबीर दास की यह पंक्ति इस संनाद को सूक्ष्मता से व्यक्त करती है:

"माया महाठगिनी हम जानी, तिरगुन फाँस लिए कर डोलै। बोलत है कुछ और करत है, साँच कहावे झूठा ठहरै।"

अर्थात, माया एक महान ठगिनी है, जो त्रिगुणों (सत, रज, तम) के जाल में फँसाकर मनुष्य को पाप के मार्ग पर डोलने को विवश करती है।

संस्कृत में एक श्लोक इस विचार को संनादित करता है: "स्वतन्त्रं चेत् प्रजायते सर्वं विश्वं तदाश्रितम्। स्वातन्त्र्यं चेत् न स्यात् किं विश्वेन संनादति॥"

अर्थात, "यदि स्वतंत्रता है, तो विश्व उस पर आश्रित है; यदि स्वतंत्रता न हो, तो विश्व का संनाद कैसे संभव है?"

हिंदू धर्म: अज्ञानता, इच्छा और कर्म का चक्र

हिंदू धर्म में पाप को "पाप" अथवा "अधर्म" कहा जाता है, जो अज्ञानता (अविद्या), अनियंत्रित इच्छाओं (काम) और कर्म के चक्र से उद्भूत होता है। भगवद्गीता में अर्जुन का प्रश्न इस संदर्भ में मूलभूत है (3:36):

"अथ केन प्रयुक्तोऽयं पापं चरति पूरुषः। अनिच्छन्नपि वार्ष्णेय बलादिव नियोजितः॥"

अर्थात, "हे कृष्ण, मनुष्य अनिच्छा होने पर भी बलपूर्वक पाप की ओर क्यों प्रेरित होता है?"

श्रीकृष्ण का उत्तर सूक्ष्म और सारगर्भित है (3:37):

"काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः। महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्॥"

अर्थात, "यह कामना और क्रोध, जो रजोगुण से उत्पन्न होते हैं, अति भक्षक और महापापी हैं; इन्हें यहाँ आत्मा का शत्रु जानो।"

गीता इस प्रक्रिया को और विस्तार देती है (2:62-63):

"ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते। सङ्गात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥ क्रोधाद्भवति सम्मोहः सम्मोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥"

अर्थात, "विषयों के चिंतन से आसक्ति, आसक्ति से कामना, कामना से क्रोध, क्रोध से मोह, मोह से स्मृति का भ्रम, और अंततः बुद्धि का नाश होकर मनुष्य का पतन होता है।"

महाभारत में दुर्योधन का द्रौपदी के प्रति चीरहरण का कृत्य इस संनाद का प्रत्यक्ष प्रमाण है। उसका पाप ईर्ष्या, लालसा और अहंकार के संनाद से उत्पन्न हुआ। भीष्म पितामह का उपदेश (शांति पर्व, 12:139) इस संदर्भ में मार्गदर्शक है:

"न हि धर्मः सुखाय स्याद् अधर्मः सुखदः कुतः। अधर्मेण यदा याति नरः स नरकं ध्रुवम्॥"

अर्थात, "धर्म सुख का साधन नहीं, तो अधर्म से सुख की आशा कैसे? अधर्म निश्चित रूप से नरक की ओर ले जाता है।"

इंडोनेशिया के बाली में हिंदू मंदिरों में पुजारियों ने मुझे बताया कि पाप कर्म का फल है, जो आत्मा को अधोगति की ओर ले जाता है। तुलसीदास की यह चौपाई इस विचार को संनादित करती है:

"करम प्रधान बिस्व करि राखा, जो जस करइ सो तस फल चाखा।
जाके जिय जेही भावना, ताही भाव फल अनुसराना।"

अर्थात, "कर्म इस विश्व का आधार है; जैसा कर्म करोगे, वैसा फल भोगोगे। मन में जैसी भावना, वैसा ही फल मिलता है।"

जैन धर्म: आसक्ति और हिंसा का परिणाम

जैन धर्म में पाप "पाप कर्म" है, जो आत्मा को अशुद्ध कर उसे मुक्ति से वंचित करता है। जगपुरा में जैन संतों ने मुझे यह दृष्टि दी कि पाप का मूल राग (आसक्ति) और द्वेष (घृणा) में निहित है। तत्त्वार्थ सूत्र (6:1-2) इस संनाद को स्पष्ट करता है:

"हिंसानृतस्तेयाब्रह्मपरिग्रहेभ्यः कर्मबन्धः॥"

अर्थात, "हिंसा, असत्य, चोरी, कामुकता और संग्रह से कर्म का बंधन उत्पन्न होता है।"

मलेशिया के एक जैन मंदिर में एक संत ने कहा, "हिंसा केवल शारीरिक नहीं, मानसिक भी पाप है।" जैन कथा में राजा श्रेणिक की लालसा उसे पाप की ओर ले गई, किंतु संयम ने उसे मुक्ति का मार्ग दिखाया। "उत्तराध्ययन सूत्र" (9:34) में लिखा है:

"रागद्वेषवशात् जीवः कर्मणा बध्यते सदा। संयमेन विशुद्धिः स्यात् ततः पापात् प्रमुच्यते॥"

अर्थात, "राग और द्वेष के अधीन जीव कर्म से बंधता है; संयम से शुद्धि और पाप से मुक्ति मिलती है।"

सूरदास इस भाव को अपनी भक्ति में व्यक्त करते हैं:

"मन रे तू काहे न धीरज धरे, विषय रस में डूबत रहत है।
हरि बिनु और न कछु काम, पाप-पुण्य सब एक समान।"
अर्थात, "मन क्यों धैर्य नहीं रखता? विषयों में डूबकर पाप करता है। हरि के बिना सब व्यर्थ है।"

बौद्ध धर्म: तृष्णा और अज्ञानता का संनादित जाल
बौद्ध धर्म में पाप को "अकुशल कर्म" कहा जाता है, जो दुख का स्रोत है। बुद्ध ने "तृष्णा" को दुख का मूल बताया। धम्मपद (1:1-2) इस संनाद को व्यक्त करता है:
"मनोपुब्बङ्गमा धम्मा, मनोसेट्ठा मनोमया। मनसा चे पदुट्ठेन, भासति वा करोति वा। ततो नं दुक्खमन्वेति, चक्कंव वहतो पदं॥"
अर्थात, "मन ही सभी धर्मों का मूल है; दूषित मन से दुख संनादित होता है।"
थाईलैंड के मंदिरों में भिक्षुओं ने मुझे बताया कि तृष्णा ही पाप का बीज है। धम्मपद (251) आगे कहता है:
"नत्थि रागसमो अग्गि, नत्थि दोससमो गहो। नत्थि मोहसमं जालं, नत्थि तण्हासमा नदी॥"
अर्थात, "राग से बड़ी अग्नि, दोष से बड़ा बंधन, मोह से बड़ा जाल, और तृष्णा से बड़ी नदी नहीं।"

कंबोडिया के अंगकोर वाट में एक भिक्षु ने कहा, "पाप वह है जो मन को अंधेरे में डुबोता है।" रहीम की यह पंक्ति इसे सूक्ष्मता से व्यक्त करती है:
"रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो चटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़ जाय।"
अर्थात, "प्रेम का धागा तोड़ने से पाप बढ़ता है, जो टूटे तो गाँठ बन जाती है।"

ईसाई धर्म: मूल पाप और प्रलोभन का संनाद
ईसाई धर्म में "मूल पाप" की अवधारणा है। बाइबिल (Genesis 3:1-6) में आदम और हव्वा का प्रलोभन इसका प्रतीक है। यीशु कहते हैं (मत्ती 15:19): "मन से ही दुष्ट विचार, हत्या, व्यभिचार उत्पन्न होते हैं।" फिलीपींस में एक पादरी ने कहा, "पाप शैतान का प्रलोभन और मानव की कमजोरी का संनाद है।" संस्कृत में:
"देवं त्यक्त्वा विषयान् सेवते यः स पापभाग् भवति नरः॥"
अर्थात, "ईश्वर को त्यागकर विषयों की सेवा करने वाला पाप का भागी बनता है।"

पारसी धर्म: अच्छाई और बुराई का अनन्त संनाद
पारसी धर्म में पाप अंग्रा मैन्ऊ (बुराई) के प्रभाव से है। हांगकांग में एक पारसी मित्र ने कहा, "पाप जीवन के युद्ध में गलत पक्ष का चयन है।" संस्कृत में:
"सत्यं त्यक्त्वा योऽनृतं चरति स पापेन संनादति॥"
अर्थात, "सत्य छोड़कर असत्य का आचरण करने वाला पाप से संनादित होता है।"

यहूदी धर्म: लक्ष्य से चूक का संनाद

यहूदी धर्म में पाप "हेट" है, अर्थात "लक्ष्य से चूक।" दाउद और बथशेबा की कथा इसका उदाहरण है। संस्कृत में:
"मनसः दुष्टभावेन कर्मणां पापमुद्भवति॥"
अर्थात, "दुष्ट मन से पाप उद्भवता है।"

महाभारत के उपदेश: पाप का सूक्ष्म विश्लेषण
महाभारत में भीष्म कहते हैं (शांति पर्व, 12:167):
"लोभात् क्रोधः प्रभवति क्रोधात् सम्मोहः संजायते। सम्मोहात् पापमुद्भवति तस्मात् सर्वं परित्यजेत्॥"
अर्थात, "लोभ से क्रोध, क्रोध से मोह, और मोह से पाप उत्पन्न होता है।"
अश्वत्थामा का पांडव-पुत्रों की हत्या का कृत्य और कर्ण का अधर्म का साथ देना इसके प्रमाण हैं। विदुर कहते हैं (5:33):
"अधर्मस्य संनिकर्षात् पुरुषः पापमाचरति॥"
अर्थात, "अधर्म की संगति से पाप संनादित होता है।"

मेरे यात्रा अनुभव: वैश्विक दृष्टिकोण
- वियतनाम: "पाप अज्ञानता का संनाद है।"
- फीजी: "कर्म ही पाप का आधार है।"
- तिमोर: "प्रलोभन पाप का स्रोत है।"

निष्कर्ष: पाप एक संनादित पहेली
पाप स्वतंत्रता, अज्ञानता, इच्छा, प्रलोभन और परिस्थितियों का संनादित परिणाम है। गीता (6:5) कहती है:
"उद्धरेदात्मनात्मानं नात्मानमवसादयेत्। आत्मैव ह्यात्मनो बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः॥"
अर्थात, "आत्मा ही मित्र और शत्रु है।"
मीराबाई का यह भजन इसे पूर्ण करता है: "पायो जी मैंने राम रतन धन पायो।
वस्तु अमोलिक दी मेरे सतगुरु, किरपा कर अपनायो।"
अर्थात, "सत्य की खोज पाप से मुक्ति का मार्ग है।"
पाप मानवता को गहराई से समझने और उससे ऊपर उठने का संनादित अवसर है।